Poetry

অন্তঃস্থ বর্ণের কথা

অবসাদে অবসন্ন মনে
ঘিরে থাকা অন্তর্জলি যাত্রা /
একমনে খেলা করা
অন্তঃস্থ বর্ণের সাথে /
সবার পেছনে পড়ে থাকা
য র ল ব হ/

ওরা বলে যায় চুপিচুপি আজ/যবনিকা নয় /কাছে রাখো
উত্তমাশা অন্তরীপ ছুঁয়ে থাকা যুগান্তরের বার্তা /
তোমার যৌবন ঘিরে থাকা
একরাশ রঙিন পলাশ /

রক্তক্ষরণ নয় /
নয় কোনও রক্তপ অভিলাষ/ নয় কোনও রণক্লান্তির অহেতুক
সুদীর্ঘ নিশ্বাস /
কাছে রেখো এক রক্তিম সকাল /এক রঞ্জিত রথযাত্রার বিস্তীর্ণ
অবকাশ /

লবণাক্ত সমুদ্রে ভেসে থেকে
আর নয় নিরুদ্দেশ যাত্রা/
কোনও লক্ষ্মীছাড়া ললাট লিখনের একপাশে দাঁড়ি টানা নয়
/সাথে রেখো উন্মুখ মনের
ললিত ঝঙ্কার/ এক নতুন ভোরের সন্ধানে /

হাহাকারে ডুবে থাকা অসংখ্য অভুক্ত মুখ দেখে /
মুখ লুকোনো নয় /
হিমবাহের সাথে ভেসে যাওয়া মৃত্যুর প্রহেলিকা আর নয় /

হাইফেন টানা অসংখ্য দূরত্ব
দূরে ঠেলে /হাত দুটো বের করে আনো তোমার/ অনুভূতির
অনুকম্পায় ছুঁয়ে যাওয়া হেমন্ত আবেগে /
থাকুক জেগে হিম্মত
এক হিমালয় সমান
প্রতিজ্ঞার আদলে /

আর নয় বধ্যভূমির বিধ্বস্ত বিক্ষেপ /নয় কোনও বিধিদত্ত
বিড়ম্বনার বিধিলিপি /
সাথে রাখো বাঙ্ময় বর্ণচ্ছটা/
এক বিমূর্ত বন্দনায়
শুরু হোক নয়া বিনিময়/

দেবাশিস মজুমদার
29 মে, 2020

कोरोना का क़हर !

कोरोना ! क्या क़हर बरपाया है!
बड़े बड़ों को घुटनों पर लाया है।
सारे हथियार रख कर भी,
हम कितने निढाल हैं, हमें यह बतलाया है।

ज़िन्दगी का चक्का 360° घुमाया है।
जो घर के कामों को कभी देखते न थे,
उनसे भी झाड़ू , पोंछा और बर्तन मंझवाया है।

देश बंद , शहर बंद , दुकानें बंद ,
हर दूसरी चीज़ है बंद इस जहान में ;
ये कैसा वक़्त आया है ?
सबसे बड़ा धक्का इसने , गरीबों के पेट पर लगाया है।

ऐसा लगता है, जैसे सब मुर्झाए हैं ;
पर इन मुर्झाए हालातों में ,
क़ुदरत ने हंस्ता , खिलता , नया रंग दिखाया है।

तकलीफ के इन दिनों में ,
लोगों का प्यार भी नज़र आया है ;
जिनकी थाली में रोटी नहीं है,
सबने मिलकर उनको भी खाना खिलाया है।

जिनको गुरूर था अपने हथियारों पर ,
उनको सच्चाई से रूबरू कराया है ;
धक्का ऐसा लगा है देशों को ,
कि सुपरपावर कहलाने वाला भी , बेबस हो आया है।

थम गई सारी दुनिया कुछ पल में ,
इसने ऐसा क़हर ढाया है।
कोरोना ! क्या क़हर ढाया है !
शायद सबको एहसास होगा ,
कि हमने अपने बुरे कर्मों का फल पाया है।

क्या अमीर , क्या ग़रीब ,
क्या दुश्मन , क्या दोस्त ।
भले ही आपस में दूरियां हैं ,
पर सबने एक दूसरे का हौंसला बढ़ाया है।

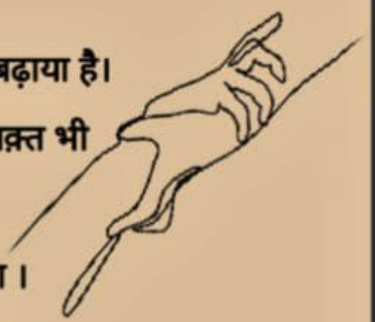

अगर हम सब चाहें तो , ये बुरा वक़्त भी
साथ मिलकर गुज़र जाएगा ,
आज नहीं तो कल
ढलते सूरज की तरह ,
कोरोना का क़हर भी ढल जाएगा ।

~ अरबाज़ अहमद .

Arbaz Ahmed
(THC ECO - SEM IV)

A Glimpse into the Future

Hunger pangs everywhere
Peace is found nowhere,
Time has come and time has gone
The epidemic will end is a conclusion foregone.

Tomorrow the pain and anger of men will leave the world scorched
Sorrow will prevail, lives will be lost
Yesterday we had exploited the world
Today we know what it cost.

In a flip of a coin everything changed
Humans have forgotten the true meaning of been engaged,
Gone are the joys of personal interactions
Breaking mankind in smaller fractions.

Still from this very decay
We will create a beautiful way,
Towards a long and fulfilling peace
Towards a long and fulfilling peace.

- Adarsha Chattopadhyay
BSC Economics Hons.